लाड कोड तो हथमें, संग या सांजाए।
जडे तडे तूंही डिए, बेओ कोए न कितईं आए।। १७ ।।

हमारे लाड़ और खुशी सब आपके हाथ में है। इसकी जानकारी और पहचान आप कराते हैं। जब कभी देते हो तो आप ही देते हो। दूसरा कोई कहीं है ही नहीं।

जडे आंणीने ओडडा, तडे पेरई डिंने लज्जत।
हे डिंनो अचे सभ तोहिजो, मूंके बुझाइए सौ भत।। १८ ।।

जब आप अपने पास बुलाते हैं, तो पहले से ही आनन्द आने लगता है। यह सब आप के देने से आता है। यह मुझे सब तरह से समझा दिया है।

जीं बुझाइए मूंहके, डे तूं मेहेर करे।
जे न घुरां तो कंने, त को आए बेओ परे।। १९ ।।

जैसा आपने मुझे समझाया है, आप मुझे मेहर करके दें। यदि आपसे मैं न मांगू, तो दूसरा कौन है जिससे मांगू?

ए तो सिखाई मूं सिखई, को न घुरां धणी गरे।
मूं थेयूं हजारूं हुजतूं, जडे तो डिंनो संग करे।। २० ।।

जो आपने सिखाया तो मैं सीखी कि अपने धनी से क्यों नही मांगू। मेरी हजारों चाहनाएं थीं जो आपने मुझे पहचान कराकर पूरी दीं।

संगडो डिठम बेसक, मंझ तोहिजे इलम।
त चुआं थी हुजतूं, जे चाइए थो खसम।। २१ ।।

मैंने अपने सम्बन्ध को आपके इलम से तेहकीक कर पहचान लिया। इसलिए दावे के साथ कहती हूं। जो आप कहलवाते हो।

हांणे चाह डिए थो दिलके, त दिल करे थो चाह।
अपार मिठाइयूं तोहिज्यूं, जे डिंने पाण हथांए।। २२ ।।

जब आप हमारे दिल में चाहना पैदा कराते हो, तो हमारा दिल चाहना करता है। आपकी वाणी में बेशुमार सुख हैं, जिसे आप अपने हाथ से देते हैं।

महामत चोए मेहेबूबजी, ही सुणज दिल धरे।
हांणे हेडी डिजंम हिमंत, जीं लगी रहां गरे।। २३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे लाड़ले धनी! यह बात दिल से सुन लो। अब ऐसी ताकत दो कि मैं आपके गले से चिपटी रहूं।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। १२९ ।।

श्री देवचन्दजी मिलाप विछोहा

सांगाए थिंदम धाम संगजी, तडे घुरंदिस लाड करे।
दम न छडियां तोहके, लगी रहां गरे।। १ ।।

जब परमधाम के सम्बन्ध की पहचान हो गई तब मैं आपसे लाड़ (प्यार) करके मांगती हूं। अब आपको एक पल के लिए नहीं छोड़ूंगी। गले से चिपटी रहूंगी।

Nijanand App

जासीं संग न सांगाए, त रूह केडी सांजाए।
हे गाल्यूं थियन सभ मथियूं, त कीं लाड करे घुरांए।। २ ।।

जब तक सम्बन्ध की पहचान नहीं है, तब तक आत्म की पहचान कैसे हो? यह सब बातें ऊपर की हैं, तो यह प्यार करके कैसे मांगी जा सकती हैं?

हे सभ सांजायूं तो हथ, लाड सांगाए या संग।
कौल फैल या हाल जो, तो हथमें नों अंग।। ३ ।।

हे राजजी महाराज! यह सब पहचान कराना आपके हाथ में है। अब चाहे प्यार करो, साथ में रखो या पहचान कराओ। हमारी कहनी, करनी, रहनी तथा शरीर के सब अंग आपके हाथ हैं।

पेरो केयां जा गालडी, सा रूहके पूरी लगी।
हिक तो रे को न कितईं, हे तोहिजे इलमें सक भगी।। ४ ।।

पहले जो आपने बात बताई वह मेरी आत्मा को चुभ गई (सत्य बैठ गई)। आपके इलम से यह संशय भी मिट गया कि आपके बिना और कोई नहीं है।

तो घर न्यारो दुनी से, थेयम तोसे संग।
आसमान जिमी जे विचमें, मूंके तो धारा सभ रंज।। ५ ।।

आपके सम्बन्ध से पता चला कि हमारा घर दुनियां से न्यारा है। आसमान और जमीन के बीच में यहां आपके बिना सब दुःख ही दुःख है।

घणा डींह घारिम कुफरमें, कर कूडे से संग।
कंने सुणी संग तोहिजो, लगी न रूह जे अंग।। ६ ।।

मैंने इस दुनियां में झूठों का साथ करके बहुत दिन झूठ में ही बिता दिए। आपकी बातें जो कानों से सुनी; वह मेरी आत्मा में नहीं चुभीं।

हे दिल आइम तेहेकीक, जे हेकली थियां आंऊं।
त खिल्ले कूडे मूंह से, थिए दम न अघाऊं।। ७ ।।

अब यह दिल में निश्चय हो गया है कि मैं अकेली आपके पास आऊं, तो आप मुझे तरह-तरह से हंसाएंगे। पर किसी तरह से एक पल के लिए भी आपसे अलग न होऊंगी।

हे तां पाणे पधरी, जे आंऊं हेकली थियां।
तडे कीं न अचे तो दिलमें, जे आंऊं हिन के सुख डियां।। ८ ।।

यह तो आपने ही प्रत्यक्ष कह रखा है कि मैं अकेली होकर आपके पास आऊं। आपके दिल में यह क्यों नहीं आता कि मैं इनको सुख दूं।

थियां हेकली हिन रंजमें, मथे अभ तरे थी भूं।
ईं हाल पसां पांहिजो, त कीं छडे हेकली मूं।। ९ ।।

मैं इस दुःख के संसार में अकेली हूं। जहां नीचे जमीन और ऊपर आसमान है। मेरी ऐसी हालत देखकर आपने मुझे अकेला कैसे छोड़ दिया है?

Nijanand App

धणी मूंहजे अर्सजा, चुआं मूं हेकली जो हाल।
जीं आंऊं गडजी विछडिस, सा करियां आंसे गाल।। १० ।।

हे मेरे धाम के धनी! मैं अपने अकेले हो जाने की हालत बताती हूं कि मैं आपसे कैसे मिली और बिछुड़ गई? यह बात मैं आपसे बताती हूं।

आंऊं हुईस धणी जे कदमों, तडे संग न सांगाए।
चेआंऊं घणी भत्तिएं, पण थीयम न सांजाए।। ११ ।।

मैं सबसे पहले जब धनी के चरणों में पहुंची तो मुझे मेरे सम्बन्ध की पहचान नहीं थी। मुझे तरह-तरह से समझाया, परन्तु मुझे पहचान नहीं हुई।

तडे धणिए मूंके चयो, जे ब जण्यूं आईंन।
खिल्ले थ्यूं न्हारे रांद अडां, तांजे सांगाईंन।। १२ ।।

तब धनी ने मुझे कहा कि खेल में दो जनी आई हैं जो खेल को देखकर हंस रही हैं। कैसे भी उनको जगाना है (यह इशारा शाकुण्डल शाकुमार के लिए है)।

रूहअल्लाएं ईं चयो, पांण न्हारे कढ्यूं तिन।
पांण से न्हारे न कढ्यूं, आंऊं हुइस गाल में इन।। १३ ।।

श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने कहा, परन्तु स्वयं उनको नहीं जगा सके। मैं भी सोचती रह गई कि उन्होंने स्वयं क्यों नहीं खोजकर निकाला।

पांण बखत हल्लण जे, याद केयांऊं मूंके।
चेयाऊं ईं जेडिन के, जे कोठे अचो हिनके।। १४ ।।

अपने धाम चलने के समय (श्री देवचन्द्रजी ने) मुझे याद किया (जब मैं धरौल में कलाजी के पास था)। सब सखियों से, अर्थात् श्री बिहारीजी और श्री बालबाईजी को कहा कि मेहराज ठाकुर को बुलाकर लाओ।

अची आंऊं पेरे लगी, तडे मूंके चेयाऊं ईं।
रूह तोहिजी रोए थी, आंऊं पेया अर्समें कीं।। १५ ।।

मैंने आकर उनके चरणों में प्रणाम किया। तब मुझसे इस तरह कहा कि श्री इन्द्रावतीजी धाम के दरवाजे पर तेरी रूह खड़ी रो रही है। मैं परमधाम कैसे जाता? अर्थात् श्री इन्द्रावतीजी का दिल ही धाम है। इसमें वियोग के कारण कैसे बैठते?

दर माधा अर्स जे, आंऊं रोंदी पसां हित।
ते मूं तोके कोठई, आंऊं हल्ली न सगां तित।। १६ ।।

परमधाम के दरवाजे के सामने मैंने श्री इन्द्रावतीजी को रोते देखा है, इसलिए मैंने तुझको बुलाया, क्योंकि मैं धाम में जा नहीं सकता था।

मूंके चेयाऊं पधरो, सा सुई गाल सभन।
पर केर परुडे इसारतूं, संदयूं हिन दोसन।। १७ ।।

मेरे से यह बात स्पष्ट कही जो सबने सुनी। इन दो दोस्तों की (सुन्दरबाई, श्री इन्द्रावतीजी) बातें दूसरा कौन समझे?

Nijanand App

करे मेडो चेयांऊं मीठी भत्ते, पण आंऊं निद्र मंझ।
पण मूं कीं न परूड्यो, सर छडे उड्या हंज।। १८ ।।

मुझसे मिलकर मीठी-मीठी बातें कीं, परन्तु मुझे माया की लहर थी और मैं कुछ नहीं समझ सकी। तब भवसागर को छोड़कर धनी चले गए।

ईं थीयस आंऊं हेकली, भोंणा डोरींदी बेई।
धणिएं जा मूंके चई, तांजे न्हारे कढ़ां सेई।। १९ ।।

हे प्रीतम! मैं इस तरह अकेली हो गई हूं और उन दोनों को ढूंढ़ती हुई भटकती हूं। धनी ने जो मुझ से कहा था। सोचा शायद उनको ही ढूंढ़ निकालो।

डोरींदे जे लधिम, अरवा कई हजार।
किन जाण्यो घर नूरजो, के नूर घर पार।। २० ।।

खोजते-खोजते कई हजार सखियां मिलीं। इनमें से कुछ अक्षरधाम की, कुछ परमधाम की मिलीं।

हिनीमें जे बे चयूं, सुन्दरबाई सिरदार।
से पण थेयूं निद्र में, तिंनी सुध न सार।। २१ ।।

इनमें सिरदार सुन्दरबाई (श्री देवचन्द्रजी) ने दो बताईं। वह खेल में इतना मग्न हो गईं कि उनको घर की सुध नहीं रही।

तिंनी बी में हिकडी, अची गडई मूं।
जे हाल आए इन जो, से जाणे थो सभ तूं।। २२ ।।

उन दोनों में मुझे एक शाकुण्डल आकर मिली और इस शाकुण्डल की जो हालत है, वह सब आप जानते हैं।

आंऊं बेठिस हिनजे घर में, मूंके रख्याई भली भत्त।
केयांई सभे बंदगी, जांणी तोहिजी निसबत।। २३ ।।

मैं शाकुण्डल के घर में ही बैठी हूं। मुझे आपका ही स्वरूप पहचान कर, सब प्रकार से भली भांति सेवा, बंदगी कर रहे हैं।

हिक हिनजे दिल में, द्रढाव वडो डिठम।
हांणे माधा हथ तोहिजे, पण हितरो पेरो केयो पिरम।। २४ ।।

शाकुण्डल के दिल में इरादा पक्का देखा। अब आगे आपके हाथ में है। इतना तो पहले मैंने कर दिया।

चेयम हाल हिनजो, जा हिक मूं गडई।
मूं बेओ जमारो डोरींदे, हुन बी पण खबर सुई।। २५ ।।

मुझे एक जो शाकुण्डल मिली है उसकी हकीकत बताती हूं। ढूंढते ढूंढ़ते मेरी उम्र बीत गई। इसकी खबर शाकुमारबाई ने भी सुनी।

Nijanand App

हे बए जण्यूं मिडी करे, मूंके थ्यूं न्हारीन।
हुन असिधें ईं न विचारियो, हो मूं लाए डुख घारीन।। २६ ।।

शाकुमारबाई ने सुना कि शाकुण्डल और श्री इन्द्रावतीजी मिलकर दो जनी मुझे खोज रही हैं। उसने फरामोशी में यह विचार नहीं किया कि यह दोनों मेरे लिए दुःख उठा रही हैं।

हो हल्लण के उतावरयूं, अर्स उपटे दर।
हे कीं रेहेंदयूं रंज में, हुन बिसरी न्हाए खबर।। २७ ।।

एक जो शाकुण्डल मिली है वह घर चलने के लिए जल्दी मचाती है। कहती है कि परमधाम के दरवाजे खोलो। वह दुःख के सागर में कैसे रहे? दूसरी शाकुमार है। वह भूली है और उसे खबर भी नहीं है।

ते लाएं पिरम आंऊं हेकली, मूं बी न गडजी कांए।
जे तोजो दर उपटे, मूज्यूं आसडियूं पुजाए।। २८ ।।

इसलिए हे धनी! मैं अकेली हूं। मुझे दूसरी नहीं मिली जो आपके धाम का दरवाजा खोलकर मेरी इच्छा पूरी करे।

पिरम हांणे पांण विचमें, तूंहीं आइए तूं।
से तूं जांणे सभ कीं, हे तो सुध डिंनी मूं।। २९ ।।

हे मेरे धनी! अब मेरे और आपके बीच केवल आप ही हैं। यह सब खबर आपने मुझे दे दी है। यह सब बातें आप जानते हैं।

धणी तूं पसे थो पांणई, अने कुछाइए थो पांण।
जा करे गाल रे इस्क, सा दानाई सभ अजांण।। ३० ।।

हे धनी! आप स्वयं देखते हो और मुझसे कहलवाते हो। जो अंगना बिना इश्क के बात करे वह उसकी अज्ञानता की चतुराई है।

दम में चुआं आंऊं हेकली, दम में गडजिम बेई।
दम में मेडो रूहन जो, न्हारियां थी त्रेई।। ३१ ।।

एक क्षण में मैं कहती हूं कि मैं अकेली हूं। उसी क्षण में मैं कहती हूं कि मुझे दोनों मिलीं। क्षण में कहती हूं कि मुझे रूहें मिलीं और तीसरी शाकुमार को खोज रही हूं।

दम में आंऊं बाझाइंदी, दम में हित नाहियां।
दम में भाइयां मूर थी, तोके थीराइयां।। ३२ ।।

क्षण में मैं कलपती हूं और पल में विचारती हूं कि मैं यहां हूं नहीं। पल में जानती हूं कि परमधाम में आप ही केवल हमारे हैं।

फिरी पसां जा पाण अडां, त करियां कांध से दानाई।
तडे अची लिकां थी तो तरे, चुआंए डिंनी धणीजी आई।। ३३ ।।

फिर मैं अपनी तरफ देखती हूं तो लगता है कि मैं अपने पति से चतुराई कर रही हूं। जब छिपकर आपकी तरफ विचार करती हूं तो कहती हूं कि धनी की ही यह माया है।

Nijanand App

धणी मूंजी गालिनजी, से सभ तो के आए जांण।
अव्वल विच आखिर लग, तो डिंनो अचे पांण।। ३४ ।।

हे मेरे धनी! मेरी और आपकी बातें आपको सब मालूम हैं। शुरू की, बीच की और आखिर की सभी बातें आपकी दी हुई मुझे मिली हैं।

हे तो डिंन्यू पांणई, गाल्यूं मूंके करण।
पण जासीं डिए न इस्क, दर खुले न रे वरण।। ३५ ।।

यह तो आपने स्वयं ही मुझे दी हैं, ताकि आप मेरे से बातें कर सकें। जब तक आप इश्क नहीं देंगे, हे प्रीतम! आपके बिना परमधाम के दरवाजे नहीं खुलेंगे।

ईं हाल डिंने धणी मूंहके, जीं गभुराणी मत।
जां तो इस्क न आइयो, तां कुछां थी सो भत।। ३६ ।।

धनी! आपने मेरी ऐसी हालत कर दी है जैसे एक बालक की बुद्धि होती है। जब तक आपका इश्क नहीं आ जाता, तब तक इसी तरीके से बोलती हूं।

मांठ करे पण न सगां, बंधां जा बोले।
सभ जाणे थो रूहजी, चुआं कुजाडो दिल खोले।। ३७ ।।

चुप भी नहीं रह सकी। बोलती हूं तो बंध जाती हूं। मेरी आत्मा की सब बातें आप जानते हो। आगे दिल खोलकर मैं क्या बताऊं?

बेओ को न पसां कितईं, सभ अंग तांणीन तो अडूं।
जे हाल पुजाइए पुंनिस, हांणे को न करिए हेकली मूं।। ३८ ।।

दूसरे किसी को मैंने कहीं देखा ही नहीं। मेरे सभी अंग आपकी तरफ खींचते हैं। जिस हालत में आपने मुझे पहुंचाया है, उस हालत में अब मुझे अकेली क्यों नहीं कर देते?

जे तूं करिए हेकली, भाइए गडजां आंऊं।
से तां तोहिजी सिखाइल, त पाइयां थी धांऊं।। ३९ ।।

यदि आप मुझे अकेला कर दें, तो लगता है मैं आकर आपसे मिल जाऊंगी। यह मैं आपकी सिखाई बात बोल रही हूं, इसलिए पुकार-पुकार के कहती हूं।

हे जे कराईयूं गालियूं, एही कौल फैल जे हाल।
हिन मजलके ओडडी, मूंके केइए नूरजमाल।। ४० ।।

यहां जो आपने बातें कराई हैं, मेरी सभी कहनी, करनी और रहनी से मंजिल नजदीक दिखाई देती है। यह कृपा भी आपने मेरे ऊपर की है।

पिरी डिए थो जे दिलमें, सा माधाई करियां पुकार।
से सभ तूंही कराइए, तो हथ कारगुजार।। ४१ ।।

हे धनी! जो बात आप मेरे दिल में पैदा करा देते हो, वह मैं पहले से ही मांगने लगती हूं। सब कुछ आपके हाथ में है और आप ही सब कुछ कराते हैं।

Nijanand App

लाड कोड आसां उमेदूं, रूहें सभ दिलमें आईन।
पण तूं जे ताणिए पांण अडूं, त तोके ए भाईन।।४२ ।।

हमारे लाड़, प्यार, आशा, उम्मीदों की चाहना रूहों के दिल में है। अब यदि आप अपनी तरफ खींचो तो यह आपको जानें।

हे गाल न मूंजे हथमें, जे कीं करिए से तूं।
तांजे तूं न खेंचिए, त हे रंज सभे मूं।।४३ ।।

यह बात मेरे हाथ में नहीं है। जो भी करते हो आप ही करते हो। यदि रूहों को आप अपनी तरफ नहीं बुलाते, तो इसका दुःख मुझे जरूर है।

बेओ कित न जरे जेतरो, सभ हथ तोहिजे हुकम।
जे तिर जेतरी मूं दिल में, सभ जाणे थो पिरम।।४४ ।।

दूसरा कोई कहीं कुछ भी नहीं है। सब कुछ आपके हुकम् के हाथ में है। मेरे दिल में थोड़ी बहुत जो बात है उसे भी, हे प्रीतम! आप जानते हो।

कडे कंदासो डींहडो, अस्सां रूहें जो संग।
हे हुज्जतूं करियां लाड में, जीं साफ थिए मूं अंग।।४५ ।।

हे धनी! वह दिन अब कब दिखाओगे जब हम रूहें आपके साथ होंगी। मैं प्यार भी इसलिए करती हूं, जिससे मेरे अंगों से माया छूट जाए।

दिलमें तूं उपाइए, मंगाइए पण तूं।
मूंजी रूह के गालियूं, जे मिठ्यूं सुणाइए मूं।।४६ ।।

दिल में आप इच्छा पैदा कराते हो, फिर मंगवाते हो। मेरी रूह को मीठी बातें आप सुनाओ।

तूं चाइए कर सुणाइए, सभ उमेदूं तो हथ।
धणी मूंहजे धामजा, तूं सभनी गालें समरथ।।४७ ।।

जो आपको अच्छा लगे वही सुनाइए। मेरी सब उम्मीदें आपके हाथ में हैं। हे मेरे धाम के धनी! आप सब तरह से समर्थ हैं।

मूं चयो भूं आसमान विच, आंऊं हेकली आइयां।
जीं न अचे दिलमें खतरो, से माधाई थी लाहियां।।४८ ।।

मैंने आपसे कहा है कि यहां जमीन और आसमान के बीच में मैं अकेली हूं। दिल में कोई खतरा न उत्पन्न हो, उस डर को मैं पहले ही मिटा देती हूं।

बियूं रूहें हिन अर्सज्यूं, से तां आजिज पाणे।
हे मंझ रूअन रातो-डीहां, मूंजी रूहडी थी जांणे।।४९ ।।

परमधाम की दूसरी रूहें तो गरीब हैं। वह मेरे पास इस माया में रात-दिन आकर रोती हैं, जिसको मेरी आत्मा जानती है।

Nijanand App

जे आंऊं न्हारियां रूहन अडूं, पसी इंनी जो हाल।
रूअन अचे मूंह के, से तूं जांणे नूरजमाल।।५०।।

जब इनकी तरफ इनका हाल देखती हूं तो मुझे भी रोना आ जाता है। इस बात को, हे धनी! आप अच्छी तरह जानते हैं।

आंऊं बी बट भाइयां तिनके, जा उपटे अर्स दर।
कांध लाड पारनज्यूं, मूंके डे खबर।।५१।।

मैं इनको अपने से दूसरा समझती हूं। यदि आप इनके लिए दरवाजा खोल दो, तो हे राजजी महाराज! मेरे प्यार पूरे करने के वास्ते मुझे भी सूचित कर देना।

त कीं चुआं बी तिनके, जे मूं अडां पसी रोए।
त चुआं थी हेकली, मूं बट बी न कोए।।५२।।

मैं इनको दूसरा कैसे कहूं जो मेरी तरफ देखकर रोती हैं। इसलिए मैं कहती हूं कि मैं अकेली हूं। मेरे पास दूसरी कोई नहीं है।

पसां बाझाईंदयूं हिनके, मूं अचे बाझाण।
ईं दर ओडी कांध अडूं, थेयम बधंदी तांण।।५३।।

मैं इनको रोता देखती हूं तो मुझे भी रोना आ जाता है। इस प्रकार आपकी ओर मैं खिंची चली आती हूं।

हे सभ मेहेर धणीयजी, डिए थो रूह अन्दर।
हे पण आइम भरोसो कांध जो, जीं जाणे तीं कर।।५४।।

हे धनी! यह सब आपकी ही मेहर है, जो आप मेरी रूह पर करते हो। इतने पर भी धनी मुझे भरोसा आपका है। जैसे जानो तैसे करो।

जे मूं करिए हेकली, विच आसमाने भूं।
जे आंऊं पसां पांणके हेकली, से सभ करिए थो तूं।।५५।।

यदि आप मुझे आसमान और जमीन के बीच में अकेला कर दें तो मैं आपकी तरफ अकेली देखूं। यह सब आप ही कर सकते हैं।

जे तूं जगाइए इलम से, त पसां थी हेकली पांण।
जे की करिए संग लाडजो, त थीयम तो अडूं ताण।।५६।।

जब आप इलम से जगा देते हैं, तो मैं अपने को अकेला पाती हूं। यदि आप मेरे से प्यार करते हैं, तो मैं आपकी तरफ खिंची चली आती हूं।

करे हेकली गडजे, सभ तोहिजे हथ धणी।
मूं चेयूं उमेदूं वडियूं, जे तूं न्हारिए नैण खणी।।५७।।

मुझे अकेला करके मिलो। यह सब आपके हाथ में है। आप नजर उठाकर देखें तो मेरी बड़ी-बड़ी चाहना है।

Nijanand App

बेई कित न जरे जेतरी, कांए न रखिए गाल।
हे तेहेकीक मूंजी रूहके, केइए नूरजमाल।।५८ ।।

दूसरी बात जरा सी कहीं भी कुछ नहीं है। यह बात मेरी रूह को श्री राजजी महाराज नूरजमाल ने निश्चित करा दी है।

चुआं थी रुह मूंहजी, से पण आइम भूल।
मूंजी आंऊं त चुआं, जे हुआं विच अर्स असल।।५९ ।।

मेरी रूह कहती है ऐसा कहना भी भूल है। मैं तो तभी कह सकती हूं जब मैं अखण्ड परमधाम में हूंगी।

हित न्हाए विच बेही करे, आंऊं की चुआं मूके पांण।
केई थेई सभ तोहिजी, से सभ तोके आए जांण।।६० ।।

ऐसे झूठे संसार में बैठकर मैं अपने आपको कैसे कहूं? यहां सब कुछ करना कराना आपके हाथ है। यह सब आपको पता है।

हे पण गाल्यूं लाडज्यूं, करिए थो सभ तूं।
तो रे तोहिजी गालिनजी, दम न निकरे मूं।।६१ ।।

यह भी बातें प्यार की हैं जो आप कर रहे हैं। आपके बिना आपकी बातों का मैं दम नहीं भर सकती।

आसां उमेदूं जे हुज्जतूं, सभ तूंहीं उपाइए।
मूंजे मोंहें तेतरी निकरे, जेतरी तूं चाइए।।६२ ।।

हमारे अन्दर हमारी सभी चाहना आप ही उत्पन्न कराते हैं। मेरे मुंह से उतनी ही बात निकलती है, जितनी आप कहलवाते हो।

चई चई चुआं केतरो, सभ दिलजी तूं जाणे।
तो रे आइयां हेकली, सभ जाणे थो पांणे।।६३ ।।

कह-कहकर मैं कितना कहूं? दिल की बात सब आप जानते हैं। आपके बिना मैं अकेली हूं। यह बात भी आप जानते हैं।

महामत चोए मेहेबूबजी, हे डिंनी तो लगाए।
तूं जागे अस्सीं निद्रमें, जाणे तींय जगाए।।६४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे प्यारे श्री राजजी महाराज! यह माया तो आपने लगा दी। आप जाग रहे हैं। मैं नींद में सोई हूं, इसलिए जैसे जगा सकते हो, वैसे जगाओ।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। १९३ ।।

रूहन जो फैल हाल

धणी मूंहजी रूहजा, गाल करियां कोड करे।
आंईंन उमेदूं लाडज्यूं, अची करियां गरे।।१ ।।

हे मेरे धाम के धनी! मैं आपके साथ प्यार से खुश होकर बातें करती हूं कि मेरे अन्दर प्यार की बड़ी चाहना है जो घर में आकर पूरी करूंगी।

Nijanand App